जय भवघ्नि! जय सच्चिदानंद!!

श्रीमद्भगवद्गीता वैभव

गीताराधना - गीता जयंति

भवघ्नि आरामम, वैकुंठपुरम

भगवान की आराधना करना अलग है और

भगवान के कहे अनुसार जीवन बिताना अलग है ।

भगवान की पूजा करना अलग है और

भगवान के प्रीतिपात्र बनना अलग है ।

श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना और अध्ययन करते

आचरण में लेकर भगवान का प्रीतिपात्र बनकर

भगवान के कहे अनुसार जीवन बिताते हैं तो

सब तरह से जीवन को मंगलमय बना सकते हैं ।

जय भवघ्नि ! जय सच्चिदानंद !!

श्रीमद्भगवद्गीता वैभव

गीताराधना - गीता जयंति

विषय - सूची

१. श्रीमद्भगवद्गीता वैभव् ... 1

२. परमात्मा प्रार्थना ... 5

३. श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना ... 6

४. गीता जयंति ...13

भवघ्नि आरामम, वेकुंठपुरम

श्री गुरूभ्यो नमः

समर्थ सद्गुरू
श्री भवघ्नि गुरूदेव जी के आशीर्वाद से

साक्षात परमात्मा स्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता का भक्ति और श्रध्दासहित आराधना और अभ्यास करने, गीता के उपदेश को आचरण में लेकर संपूर्ण आयु, आरोग्य और ऐश्वर्ययुक्त अपने जीवन को मंगलमय और कल्याणदायक बनाये - ऐसी भावना रखते हुए यह छोटी सी किताब आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं ।

आपके आत्मीय भवन्घि सदस्य
भवघ्नि आशमम्
ैकुंठ पुरम्
मरावति

श्रीमद्भगवद्गीता वैभव

प्रारब्ध के अधीन होकर दुःख सागर में ड्रबतेहुए जनन - मरण चक्र में भ्रमण करते हए उससे बचने का मार्ग न जानकर व्यथित होनेवाले मानव, सुख शांति से जीवन बिताते, अपने जन्म को सार्थक बनाने के लिए मानवजाति को परमात्मा स्वरूप श्री वेदव्यासजी का प्रसाद है श्रीमद्भगवद्गीता ।

प्राराब्द दुख को भोगते मनुष्य उससे बचकर निश्चल भक्ति - श्रध्दा सहित सुखी जीवन बिताते अपने जन्म को सार्थक बनाकर मोक्ष प्राप्त करने के लिए दिशा सूचक जैसा सहायक है - यह अनुपमेय और पवित्र ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता ।

ऐसा कहने अतिशय नहीं है कि इस संसार में जितने भी पवित्रग्रन्थ हैं उनमें श्रीमद्भगवद्गीता समान कोई अन्य अनुपमेय पवित्र ग्रन्थ नहीं है ।

महर्षि श्री वेदव्यासजी का कहना है कि जब स्वयं परमात्मा के मुखाविंद से निकलि श्रीमद्भगवद्गीता के रहते अन्य शास्त्रों से क्या प्रयोजन है ?श्रीमद्भगवद्गीता के हर श्लोक के आरंभ मे ''भगवान उवाच'' है । इसका अर्थ है स्वयं भगवान बोलते है ।

किसी को भी ऐसा शक नहीं होना चाहिए कि
परमात्मा इसमें है और उसमें नहीं है, जहा भी खोजें वहीं हैं

ऐसी जगह कहीं नहीं है जहाँ परमात्मा नही है । सब में हैं, सभी जगह हैं । लेकिन जो परमात्मा श्रमद् भगवद्गगीता में हैं, वही परमात्मा हमारी सुख शंति केलिए, जो उनके पुत्र हैं, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए ये संदेश देते है ।

सुख और शांति से जीवन बिताने के लिए अपना जन्म सार्थक बनाने के लिए, सच्चाज्ञान प्राप्त करने के लिए, जिसे जानने के बाद और जानने को कुछ भी बचा नहीं है, ऐसा पवित्र ज्ञानामृत् श्रीमद्भगवद्गीता के रूप मे स्वंय परमात्मा, जो हमारे पिता, सृष्टिकर्ता हैं, संतान की भलाई के लिए श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश दिया है ।

''गीताश्रयोयहं तिष्ठामि गीता में चोत्तमं गृहम्
गीताज्ञान मुपाश्रित्य त्रीन लोकान पालयाम्यहम ।।''

स्वंय परमात्मा बोलते हैं - ''मैं गीता का आधार हूँ । गीता मेरा उत्तम गृह है । गीताज्ञान के आधार पर ही मैं तीन लोकों का पालन करता हूँ ।'' ऐसी श्रीमद्भगवद्गीता के माहात्म्य का वर्णन करना और किसी के वश में नहीं है ।

कई लोग अपने दोषों और पापों का दूर करने के लिए, अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कई देवताओं, महात्माओं की आराधना करते, तीर्थो में जाते हुए बहुत मुश्किलों का सामना करते हैं । लेकिन भगवान का कहना देखिए.

''गीतायाः पुस्तकं यत्र यत्र पाठः प्रवर्त ते
तत्र सर्वाणि तीर्थानि प्रयागादीनि तत्र वै
सर्वे देवाश्च ऋषयो योगिनः पन्नगाश्च ये
गोपाला गोपिका वापि नारदोध्दव पार्ष दैः
सहायो जायते शीघ्रं यत्र गीता प्रवर्त ते'' ।।

जिस घर में श्रीमद् भगवद्गीता को स्वंय परमात्मा का स्वरूप मानकर, पठन -पाठन और आराधना करते आचरण में लिया जाता है, उनके घर में ही सकल तीर्थ, सभी देवतायें, ऋषि, योगी, नारद, उध्दव आदि सब महात्मा और महर्षि विराजमान रहते हैं । वे सब उस घर में हाजिर रहकर घरवालों को सभी तरह की सहायता करने तैयार रहते हैं । भगवान बोलते हैं कि उस घरवालों का जीवन आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य युक्त सभी तरह से मंगलमय और कल्याणमय रहने में किसी तरह का संदेह नहीं ।

''महा पापादि पापानि गीता ध्यानं करोति चेत
क्वचित स्पर्शम् न कुर्वन्ति नलिनीदलमंभसा''

जैसे नलिनीदल पर पानी का एक बूँद भी नहीं टिक सकता वैसे ही गीता का पठन और अभ्यास करनेवालों को किसी तरह का पाप नहीं छू सकता । सभी महात्मा बोलते हैं कि गीता का पठन और अभ्यास सारे पाप और दोषों से दूर रखता है ।

जिस घर में गीता की आराधना, पठन - पाठन और आचरण होता है, उस घर के हर व्यक्ति, हर पल परमात्मा के अनुग्रह के साथ सभी महात्माओं का आशीर्वाद पाते हुए, सब तरह से समृध्द और मंगलमय जीवन का आस्वादन करते, परमात्मा की शांति पाते मोक्ष प्राप्त करते हैं ।

''गीता में हृदयम पार्थ''-

भगवान स्वयं बोलते हैं कि ''श्रीमद्भगवद्गीता मेरा हृदय ही है'' । श्रीमद्भगवद्गीता सिर्फ एक ग्रन्थ ही नहीं है । इसे परमात्मा स्वरूप और सकल देवता स्वरूप मानकर पूजा करनी चाहिए ।

भगवान ऐसा भी बोलते हैं - ''गीता में चोत्तमम् गृहम'' ''गीता मेरा उत्तम निवास स्थान है'' ।

''विद्यानां आध्यात्म विद्या अहम''

''गीता में परमाविद्या ब्रह्मरूपा न संशयः''

भगवान बोलते है - ''जो आध्यात्म विद्या - ब्रह्मविद्या है, वह भगवदगीता मैं ही हुँ'' । भगवान स्वयं बोलते हैं कि ''श्रीमद्भगवद्गीता और मुझ में कोइ फर्क नहीं है'' । **श्रीमद्भगवद्गीता साक्षात्त भगवान ही हैं** । इसमें किसी तरह का संदेह नहीं है ।

श्रीमद्भगवद्गीता सिर्फ एक ग्रन्थ नहीं है । अव्यक्त - स्वरूप भगवान का प्रतिबिंब ही श्रीमद्भगवद्गीता हैं । भगवान श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में हमारे घर में, हमारे पिता के स्थान में रहकर, हमें अच्छे - बुरे का पहचान कराते हुए, हमारी अज्ञान को दूर कर हमें सुख - शांति प्रदान करते हैं ।

''अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञान यज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः''

(अ-१८ श्लो ७०)

भगवान बोलते हैं - जो श्रीमद्भगवद्गीता को भगवान का स्वरूप मानकर आराधना और पठन-पाठन करते हैं, वे ज्ञान यज्ञ द्वारा मेरी पूजा करते है ।

''श्रेयान द्रव्यमयाध्यज्ञात ज्ञानयज्ञः पंरतप''

अ.४, श्लो ३३ ॥

फिर भगवान बोलते हैं कि सभी यज्ञों में ज्ञान यज्ञ ही श्रेष्ठ है । इसलिये गीताराधन, गीता का पठन - पाठन से अधिक कोई दूसरी पूजा या यज्ञ नहीं है । इस विश्वास से गीता की आराधना करने से सभी तरह की शुभ कामनयें पूरी होती हैं ।

स्वयं परमात्मा श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में हमारे घर में विराजमान हैं ऐसे विश्वास से आराधना करनी चाहिए। इसी विश्वास से श्रीमद्भगवद्गीता का पठन करते आचरण में लेना चाहेए । इसी विश्वास से श्रीमद्भगवद्गीता की जयंति का त्योहार मनाना चाहिए । ऐसे ही विश्वास से इस संप्रदाय को भविष्य की पीडियों तक पहुँचाना चाहिए ।

श्रीमद्भगवद्गीता के माहात्म्य को वाणी द्वारा वर्णन करने का सामर्थ्य किसी में नहीं है । लेकिन सभी उसका अनुभव प्राप्त कर सकते हैं । यह सत्य है, सत्य है, सत्य है । गीता की आराधना और अद्ययन करते समय हर एक ऐसी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं कि स्वयं परमात्मा ही उनका हाथ पकडकर आगे बढा रहे हैं । ये करो, ये मत करो करके हर पल परमात्मा आपको मार्गदर्शन करने की अनुभव पा सकते हैं ।

परमात्मा की प्रार्थना

यहाँ लोग कई देवताओं की तरह तरह की प्रार्थना करते रहते हैं । लेकिन हम, हर दिन श्रीमद्भगवद्गीता के ''विश्वरूप संदर्शन योग'' में दी गई परमात्मा की प्रार्थना करें तो वही श्रीमद्भगवद्गीता स्वरूप सृष्टि कर्ता, हमारे पिता के साथ सभी देवताओं की प्रार्थना होती है ।

त्वमादि देवः पुरूषः पुराणः त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् !

वेत्तासि वेद्यंच पश्ंच धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप !!

वायुर्यमोग्नि र्वरूण श्शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपिता महश्च !

नमो नमस्तेस्तु सहश्रकृत्वः पुनश्च भूयो पि नमो नमस्ते !!

(अ ११ श्लोः३८,३९)

आप आदिदेव, अनंत रूप, सनातन पुरूष हैं । आप इस जगत के परम आश्रय और जाननेवाले तथा जानने योग्य हैं । आप ही परम धाम हैं । हे अनंतरूप ! आपसे यह सारी जगत व्याप्त अर्थात परिपूर्ण है । आप वायु, यमराज, अग्नि, वरूण, चन्द्रमाँ, प्रजा के स्वामी ब्रह्मा और ब्रह्मा के पिता भी हैं । आप के लिए हजारों बार प्रणाम हो । आप के लिए फिर से बार - बार प्रणाम हो ।

ऐसी महिमान्वित प्रार्थना हर दिन हर घर में करें तो सभी देवाताओं, महर्षी, महात्मा, योगी और सकल तीर्थो की आराधना होती है । इसलिए यह प्रार्थना घर के सभी लोग करें तो सारे सौभाग्य पाने में किसी तरह का अतिशय नहीं है ।

श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना

श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में हमारे घर में विराजमान परमात्मा को भक्ति श्रध्दा सहित आराधना करने के लिए : -

आवश्यक चीजें :

श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ , दिये, तेल, बत्ती दियासलाई, अगरबत्ती, कर्पूर, आरती के लिए थाली, फूल, गीता की प्रतिष्ठा करने के लिए ऊँचा आसन या व्यास पीठ, आसन पर बिचाने के लिए पीला वस्त्र और पूजा के लिए १०८ फूल । (फूल न मिले तो फूल समर्पित करने के भाव से ही पूजा करें तो भी अच्छा फल मिलेगा) ।

आराधना विधिः-

श्रीमद्भगवद्गीता को साक्षात परमात्मा का स्वरूप मानकर भक्ति श्रध्द के साथ ऊँचे आसन पर प्रतिष्ठा करनी चाहिए ।

श्री सद्गुरू की प्रार्थना से आराधना शुरू करते हुए ....

ऊँ श्री गुरूभ्यों नमः

गुरूब्रह्मा, गुरूविष्णु गुरूदेवो महेश्वरः

गुरू साक्षात्त परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरूवेनमः

ऐसे भक्ति पूर्वक हाथ जोडकर नमस्कार करना चाहिए ।

ज्योति प्रज्वलनः

ज्योति प्रज्वलन के समय ऐसी भावना मन में रखनी चाहिए कि श्रीमद्भगवद्गीता के रूप मे स्वंय परमात्मा ही परंज्योति स्वरूप है ।

ज्योतिषामपि तज्जयोतिः तमसः परमुच्यते !

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्टितम् !!

(अ-१३, श्लो १७)

ऊँ तत् सत् हरिः ऊँ तत् सत्

वह परब्रह्म ही ज्योतियों का भी ज्योति है । सूरज, चन्द्रमाँ, तारे और सारी जगत को, प्रकाशित करते हैं । स्वयं हमारे अंदर अंतर्यामी होकर, हमारी बुध्दि और मनको प्रकाशित करनेवाला परमात्मा ही हैं । ऐसी भावना करनी है कि बोध स्वरूप, जानने के योग्य और तत्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य भी परमात्मा ही है । प्रार्थना के साथ आगरबत्ती जलाकर श्रीमद्भगवद्गीता के माहात्म्य का स्मरण करना चाहिए ।

श्री भगवान उवाचः

गीता मे हृदयं पार्थ गीता मे सारमुत्तमम् !
गीता मे ज्ञानमत्युग्रं गीता मे ज्ञान मव्ययम !!
गीता मे चोत्तमम् स्थानं गीता में परमं पदम् !
गीता में परमं गुह्यं गीता में परमो गुरूः !!
गीताश्रयोहं तिष्ठा मि गीता में चोत्तमम् गृहम् !
गीताज्ञानमुपाश्रित्य त्रीन लोकान् पालयाम्यहम !!
महापापादि पापानि गीता ध्यानं करोति चेत !
क्कचित स्पर्शम् न कुर्वन्ति नलिनीदलमंभसा !!
तापत्रयोद्भवा पीडा नैव व्याधिर्भवे त्क्कचित !
न शापो नैव पापंच दुर्गतिर्नरकम् न च !!
अभिचारोद्भवम् दुःखं वरशापागतंयचत !
नोपसर्पन्ति तत्रैव यत्र गीतार्चनम् गृहे !!
गीतायाः पुस्तकं यत्र यत्र पाठः प्रवर्त ते !
तत्र सर्वाणि तीर्थान्ि प्रायागादीनि तत्र वै !!
सर्वे देवाश्च ऋषयो । योगिनः पन्नगाश्च ये !
गोपाला गोपिका वापि नारदोध्धव पार्षदैः !
सहायो जायते शीघ्रं यत्र गीता प्रवर्त ते !!

श्रीमद्भगवद्गीता का घ्यान

परमात्म स्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता का भक्ति और श्रध्दा सहित ध्यान करना चाहिए ।

ऊँ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वंय
व्यासेन ग्रथितां पुराण मुनिना मध्ये महाभारतम
अव्दैतामृतवर्षिणीम भगवतीम अष्टादशाध्यायिनीम
अंबत्वामनु संधधामि भगवद्गीत भवव्देषिणीम ।।

अष्टोत्तर शतनामावली

हर नाम का उच्चारण करते, ऐसे विश्वास से कि श्रीमद् भगवद्गीता स्वरूप परमात्मा को समर्पित करते है, फूलों से पूजा करनी चाहिए । फूल न मिले तो सिर्फ समर्पित करने के भाव से भी अच्छा फल मिलता है ।

१. ॐ श्रीमद्भगवद्गीता मातायै नमः
२. ॐ परमात्म स्वरूपिण्यै नमः
३. ॐ सद्गुरू स्वरूपिण्यै नमः
४. ॐ सच्चिदानंद स्वरूपिण्यै नमः
५. ॐ सनातन धर्म स्वरूपिण्यै नमः
६. ॐ सकल देवता स्वरूपिण्यै नमः
७. ॐ सकल शास्त्र स्वरूपिण्यै नमः
८. ॐ सकल तीर्थ स्वरूपिण्यै नमः
९. ॐ शांति स्वरूपिण्यै नमः
१०. ॐ शक्ति स्वरूपिण्यै नमः
११. ॐ साधु स्वरूपिण्यै नमः
१२. ॐ अद्वैत स्वरूपिण्यै नमः
१३. ॐ वेद स्वरूपिण्यै नमः
१४. ॐ परम धर्म स्वरूपिण्यै नमः
१५. ॐ मंगल स्वरूपिण्यै नमः
१६. ॐ अमृत स्वरूपिण्यै नमः
१७. ॐ अंनतज्ञान स्वरूपिण्यै नमः
१८. ॐ सर्वोपनिषत्सार रूपिण्यै नमः
१९. ॐ तत्व प्रबोधिन्यै नमः
२०. ॐ साधुगम्यायै नमः
२१. ॐ परम पवित्रायै नमः
२२. ॐ महामहिमान्वितायै नमः
२३. ॐ व्यास संग्रधितायैनमः
२४. ॐ अष्टादशाद्यायिन्यै नमः

२५. ऊँ ब्रह्मविष्णु शिवात्मिकायै नमः
२६. ऊँ मोक्ष प्रदायै नमः
२७. ऊँ ध्यान प्रदायै नमः
२८. ऊँ दिव्यशक्ति प्रदायै नमः
२९. ऊँ दैवीसंपद प्रदायै नमः
३०. ऊँ कर्मयोग प्रदायै नमः
३१. ऊँ भक्तिज्ञान वैराग्य प्रदायै नमः
३२. ऊँ विजय प्रदायै नमः
३३. ऊँ सद्‌गुण प्रदायै नमः
३४. ऊँ अभय प्रदायै नमः
३५. ऊँ नित्यानंद प्रदायै नमः
३६. ऊँ परमशांति प्रदायै नमः
३७. ऊँ प्रेम प्रदायै नमः
३८. ऊँ सकलशुभ प्रदायै नमः
३९. ऊँ सदाचार प्रदायै नमः
४०. ऊँ आत्मानुभूति प्रदायै नमः
४१. ऊँ सर्वभूत हितायै नमः
४२. ऊँ सनातनधर्म प्रदायै नमः
४३. ऊँ पुण्य प्रदायै नमः
४४. ऊँ सर्वकामफल प्रदायै नमः
४५. ऊँ सर्वमंगल प्रदायै नमः
४६. ऊँ अमृत प्रदायै नमः
४७. ऊँ स्मृति प्रदायै नमः
४८. ऊँ सिध्दि प्रदायै नमः
४९. ऊँ पराभक्ति प्रदायै नमः
५०. ऊँ परमज्ञान प्रदायै नमः
५१. ऊँ योगश्रेम प्रदायै नमः
५२. ऊँ श्रेत्रक्षेत्रज्ञ ज्ञान प्रदायै नमः
५३. ऊँ गुणातीत स्थिति प्रदायै नमः

५४. ऊँ परमसुख प्रदायै नमः
५५. ऊँ समभाव प्रदायै नमः
५६. ऊँ सांख्यबुध्दि प्रदायै नमः
५७. ऊँ कर्तव्य बोधिन्यै नमः
५८. ऊँ सन्मार्ग दर्शिन्यै नमः
५९. ऊँ लौकोध्दारिण्यै नमः
६०. ऊँ लोक कल्याण कारिण्यै नमः
६१. ऊँ कृपा कटाक्षिण्यै नमः
६२. ऊँ कारूण्यायै नमः
६३. ऊँ अक्षरायै नमः
६४. ऊँ दुःख हारिण्यै नमः
६५.. ऊँ अज्ञान ध्वंसिन्यै नमः
६६. ऊँ भव भय हारिण्यै नमः
६७. ऊँ त्रितापहारिण्यै नमः
६८. ऊँ सकलदोष निवारिण्यै नमः
६९. ऊँ सकल पाप हारिण्यै नमः
७०. ऊँ असुरभाव ध्वंसिन्यै नमः
७१. ऊँ दुर्गणनाशिन्यै नमः
७२. ऊँ संकट हारिण्यै नमः
७३. ऊँ शोक विनाशिन्यै नमः
७४. ऊँ कर्म ध्वंसिन्यैनमः
७५. ऊँ दारिद्रय ध्वंसिन्यै नमः
७६. ऊँ साधु प्रियायै नमः
७७. ऊँ पूर्णायै नमः
७८. ऊँ भव्यायै नमः
७९. ऊँ विमलायै नमः
८०. ऊँ नित्यायै नमः
८१. ऊँ निष्कलायै नमः
८२. ऊँ निर्मलायै नमः

८३. ऊँ निरंजनायै नमः
८४. ऊँ समस्त जगदा धारयै नमः
८५. ऊँ समस्त जन संतुष्टायै नमः
८६. ऊँ संसार दुःख शमनायै नमः
८७. ऊँ त्रिलोक मातायै नमः
८८. ऊँ परमात्म हृदयायै नमः
८९. ऊँ गीतायै नमः
९०. ऊँ गंगायै नमः
९१. ऊँ गायत्र्यै नमः
९२. ऊँ सीतायै नमः
९३. ऊँ सत्यायै नमः
९४. ऊँ सरस्वत्यै नमः
९५. ऊँ ब्रह्मविद्यायै नमः
९६. ऊँ ब्रह्मवल्लयायै नमः
९७. ऊँ त्रिसंध्यायै नमः
९८. ऊँ मुक्ति गेहिन्यै नमः
९९. ऊँ अर्थ मात्रायै नमः
१००. ऊँ चिदानंदायै नमः
१०१. ऊँ भवघ्नै नमः
१०२. ऊँ भ्रांति नाशिन्यै नमः
१०३. ऊँ वेद त्रयायै नमः
१०४. ऊँ परायै नमः
१०५. ऊँ अनंतायै नमः
१०६. ऊँ तत्वार्थ ज्ञान मंजर्यै नमः
१०७. ऊँ श्रीकृष्णायै नमः
१०८. ऊँ श्रीमद्भगवद्गीतायै नमः

अत्यंत वैभव से विराजमान परमात्मा को भक्ति श्रध्दा से कर्पूर आरती समर्पित करना है ।

श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना घर के सर्व शुभ कार्यों में, त्योहारों में, विशेषतः

गीताजयंति के दिन और हो सके तो हरदिन कर सकते है । गीताराधन के बाद गीता का पठन - पाठन करना है । जितने हो सके उतने श्लोक, ऐसे भाव से स्वंय भगवान आपसे बोलते है, भक्ति भाव से पढकर, उसका भाव समझना सबसे उत्तम पारायण होता है ।

जो लोग ज्यादा श्लोक नहीं पढ सकते, उनके लिए स्वयं भगवान ने अठारहवे अध्याय के ५१, ५२, ५३ श्लोकों में बहुत ही संक्षिप्त रूप में गीता का सारा सार भर दिया है । महात्मा बोलते हैं कि ये तीन श्लोक पढने पर ही सारी भगवद्गीता पढने का पुण्य मिलता है । इसलिए हर व्यक्ति हरदिन कम से कम ये तीन श्लोक भक्ति श्रध्दा के साथ पढकर पुण्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।

संक्षिप्त गीता :

बुद्‌द्या विशुध्दया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।
शब्दादीन्विषयान त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ।।

(अ १८, श्लोक ५१)

विविक्त सेवी लघ्वाशी यतवाक्कायामानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ।।

(अ १८ श्लोक ५२)

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ।।

(अ १८ श्लोक ५३)

श्लोकों का भाव :

विशुध्द बुध्दि से युक्त, हलका, सात्विक और नियमित भोजन करनेवाला, शब्दादि विषयों का त्याग करके, एकान्त प्रदेश में रहकर सात्विक घारणाशक्ति के व्दारा अन्तःकरण और इन्द्रियों का संयम करके मन वाणी और शरीर को वश में लेनेवाला, राग-व्देष को सर्वथा नष्ट करके भली भाति दृढ वैराग्य का आश्रय लेनेवाला, तथा अहंकार, बल, घमण्ड, काम क्रोध और परिग्रह का त्याग करके निरंतर घ्यान योग के परायण रहनेवाला ममतारहित शांतियुक्त पुरूष सच्चिदानांदघनब्रह्म में अभिन्न भाव से स्थित होने का पात्र होता है ।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ (अ-९, श्लोकः२२)

इस तरह गीता की आराधना और पारायण करते, निष्काम भाव से नित्य - निरंतर चिन्तन करनेवाले भक्तों का योगक्षेम स्वयं भगवान ही वहन करने की प्रतिज्ञा करते हैं । हम अपने कर्तव्य का पालन श्रध्दा से करते रहें तो हमें जो फल प्राप्त होना है, कब और कैसे प्राप्त होना है, वह स्वंय हमारे पिता ही देखेंगे । इससे ज्यादा हमें क्या चाहिए ? इसलिए, हमे सदा ''ऊँ श्री परमात्मने नमः'' स्मरण करते रहे तो हमारा योगक्षेम भगवान ही देखेंगे ।

यत्र योगेश्वरः कृष्णों यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिधृवा नीतिर्मतिर्मम ॥

(अ-१८, श्लोः७८)

श्रीमद्भगवद्गीता हमें यह समझाता है कि जिस घर में श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना और आचारण होता है , उस घर के सभी लोग सुख - शांति के साथ संपत्ति, विजय, विभूति और अचल नीति का अनुभव करते मोक्ष प्राप्त करते हैं ।

इसलिये आप सब श्रीमद्भगवद्गीता का साक्षात परमात्म स्वरूप मानकर हरदिन आराधना करते, आचरण में लेकर अपने जीवन में सभी तरह के शुभ प्राप्त कर अपने जन्म को सार्थक बनाकर भगवान का अनुग्रह पायें ।

शुंभ भूयात !

गीता जंयति

श्रावण और कार्तीक मास को अत्यंय पवित्र मानकर पूजा करते रहते हैं । लेकिन श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान का कहना है -

''मासानाम् मार्गशीर्षो अहम'' (अ १०, श्लो ३५)

''मासों में मार्गशिर मास मैं हूँ'' ऐसा भगवान खुद कहते हैं । याने मार्गशिर मास का हर दिन पवित्र और पुण्य है न ! यही नहीं इस पवित्र मार्गशिर मास में ही भगवान का बोधस्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता हम को प्राप्त हुई है । महात्मा बोलते हैं कि इस शुभ

मार्गशिर मास में हरदिन परमात्मा की प्रार्थना करते परमात्म स्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना और पठन पाठन से घर के सभी लोग सभी तरह के सौभाग्य पाकर सुख शांति से रह सकते हैं ।

जो लोग मार्गशिर मास के पहले दिन (पाड्यमि) से लेकर आखरी दिन (अमावास) तक, हर दिन आराधना नही कर सकते, वे पहले दिन से ग्यारह के दिन माने एकादशी तक अर्थात गीता जंयति तक कर सकते है । जो ऐसा करने में भी अशक्त हैं, वे कम से कम गीताजयंति के दिन पठन पाठन और अराधना करके परमात्मा का अनुग्रह प्राप्तकर सकते हैं ।

मनुष्य सारे पापों, दोषों और दुःखों से निवृत्त होकर सुख, शान्ति और पूर्ण तृप्ति के साथ जीवन बिताते हुए मोक्ष पाने के लिए जो मानव जन्म का लक्ष्य है, श्री वेदव्यास महर्षि जी ने पवित्र मार्गशिर एकादशी के पुण्यदिन में सकल शास्त्रों का सार श्रीमद्भगवद्गीता को मानव जाति के लिए प्रदान किया है । यही दिन ''गीताजयंति'' का दिन है ।

मानव जन्म को सार्थक बनाने का महान साधन और परमज्ञान का भांडागार श्रीमद्भगवद्गीता का जनमदिन, जो गीताजयंति के नाम से प्रसिध्द है, मानवजन्म लेनेवाला कोई भूल नही सकता और भूलना भी नहीं चाहिए । यह गीता जयंति हमारे सभी त्योहारों में सर्वश्रेष्ठ है ।

उस दिन से लेकर आज तक सभी महर्षि, महात्मा और योगी भी यही उपदेश देते हैं कि सभी लोग गीताजयंति के दिन गीता की आराधना, पठन पाठन करते हुए एक दूसरे को गीताजंयति की शुभ कामनायें देते हुए, गीताजयंति का त्योहार बहुत ही वैभव के साथ मनाये।

इस दुनियाँ में कहीं और कभी भी एक ग्रन्थ की जंयति मनाना किसी की कही सुनी बात नहीं है । यह बहुत ही अद्भुत विषय है । ऐसा कहना अतिशय नहीं है कि यह विशेषता, यह गोरव सिर्फ श्रीमद्भगवद्गीता का ही है ।

गीता जयंति मनाना हमारा सनातन संप्रदाय है । श्रीमद्भगवद्गीता को स्वयं परमात्मा का स्वरूप मानकर गीता जयंति के दिन गीता की आराधना करना भगवान के प्रति हमारी भक्ति श्रध्दा को व्यक्त करना होता है ।

इसे कभी भूलना नही चाहिए कि इस संप्रदाय संपत्ति और वैभव का हम वारिस हैं । इस संप्रदाय को पीढ़ियों तक पहुँचाना हमारा धर्म है । श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति और भगवान के प्रति अपना विश्वास जतानेवाला हर एक इस संप्रदाय को बनाये रखना है । यह भगवान की सबसे उत्तम सेवा है ।

मार्गशिर एकादशी के पुण्य दिन घर के सभी सदस्य मिलकर अपने बन्धु मित्र और आसपास के लोगों को गीता जयंति की शुभकामनायें देते हुए, सबको निमंत्रितकर भक्ति श्रध्दा से अष्टोत्तर शतनामों से गिताराधन् श्रेय प्राप्त कर आयु, आरोग्य और ऐश्वर्य युक्त सुखमय जीवन का अनुभव करते, अपने जन्म को सफल बना सकते हैं ।

शुभम भूयात् !

ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः

शांति प्रार्थना

भगवान शांति स्वरूप हैं ।
हम शांत रहे - सब की शांति चाहे ।
सब की शांति में सहायक बने ।
किसी की शांति का भंग न करे ।
सब का जीवन शुभप्रद हो
सब लोग सुख और शांति से रहें
सब का जीवन समृध्द हो
सब का जीवन मंगलमय हो
लोका स्समस्ता सुखिनो भवन्तु
ऊँ शांतिः शांतिः शांति

इस तरह साक्षात परमात्मस्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना करते सब का जीवन आयु, आरोग्य और ऐश्वर्ययुक्त समृध्द और मंगलमय हो । सब सुख और शांति पायें ।

शुभम् भूयात्

हमारा संकल्प एक हो !
हमारा भाव एक हो !
हमारे चिंतन एक हो !
हमारे बीच अद्भुत सामरस्य रहे !
अथर्व ६-६४-४
ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः

भवघ्नि आरामम, वैकुंठपुरम

अमरावति मंडल, गुंटूर जिल्हा – ५२२०२०
www.bhavaghni.net Ph: +91 8331866125, 08645-250069